श्रीरामकथा की कथा

द्वितीय खण्ड

रामरंग

भारतीय विद्या मंदिर

श्रीराम कथा की कथा

द्वितीय खण्ड

आचार्य सोहनलाल रामरंग

प्रकाशक :
भारतीय विद्या मन्दिर
कोलकाता, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, बीकानेर

कृति	:	**श्रीराम कथा की कथा (द्वितीय खण्ड)**
कृतिकार	:	आचार्य सोहनलाल रामरंग
प्रथम संस्करण	:	२०७२ विक्रम संवत्, २०१५ ईस्वी
ISBN	:	978-81-89302-50-4
प्रकाशक	:	भारतीय विद्या मन्दिर 12/1, नेल्ली सेनगुप्ता सरणी, कोलकाता-700087 एवं सिम्पलेक्स इन्फ्रास्ट्रक्चर्स लिमिटेड सिम्पलेक्स हाउस, 27, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700017
सम्पर्क सूत्र	:	शंकरलाल सोमानी (098305-59364) E-mail: shankar.somani@simplexinfra.com
©	:	भारतीय विद्या मन्दिर
मूल्य	:	छह सौ रुपये मात्र
वितरक	:	साहित्यागार धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर–302003 E-mail : sahityagarjpr@yahoo.co.in ☎ : 0141-2310785, 4022382, 3255629, 2322382
मुद्रक	:	भारतीय विद्या मन्दिर कोलकाता-700087

डॉ. स्वामी राघवाचार्य वेदान्ती अग्रपीठाधीश

अध्यक्ष

श्रीजानकीनाथ बड़ा ट्रस्ट

रेवासाधाम, सीकर (राजस्थान)

शुभाशंसा

श्रीराम कथा के श्रेष्ठ अनुसंधाता श्री सोहनलाल रामरंग जी का समग्र साहित्य मुझे देखने का सुअवसर मिला। रामकथा में घृणा के रूप में देखे जाने वाली माता कैकेयी के उदात्त चरित्र का सजीव चित्रण उत्तर रामचरित काव्य में देखने को मिला।

धर्मरक्षा, राष्ट्ररक्षा के लिए रामरंगजी का समर्पण माता कैकेयी के उदात्त चरित्र की पराकाष्ठा में प्रतिष्ठित करता है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों का चरित्र चित्रण भावग्राही एवं प्रेरणाप्रद है, आपकी लेखनी से रामचरित्र के उन अनछुए पात्रों का सजीव चित्रण रामकथा के जिज्ञासुओं का पाथेय है।

मैं भगवान श्रीजानकीनाथ जी से आप जैसे मनीषी विद्वान के स्वस्थ जीवन के साथ-साथ सत्दीर्घायु की कामना करता हूँ।

शुभाकांक्षी

(स्वामी राघवाचार्य वेदान्ती)

स्वामी राघवानन्द

श्री गुरु रामदास उदासीन पीठाधिपति
अध्यक्ष - श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, दिल्ली प्रदेश
आराम बाग, पहाड़गंज, नई दिल्ली

सम्मान्नीय,

विद्यावाचस्पति आचार्य श्री सोहनलाल रामरंग जी

आपके द्वारा रचित 'श्रीराम कथा की कथा' (दो खण्ड) पढ़ने के लिये प्राप्त हुये। पढ़कर आनन्द की अनुभूति हुयी। पूर्व में आपके द्वारा रचित अनेक रचनाओं को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जिस प्रकार एक श्रेष्ठ रचनाकार की रचनाओं का निरन्तर परिष्कार होता रहता है, वैसे ही आपकी उत्तम रचना 'उत्तर साकेत महाकाव्य' अद्‌भुत् रचना है। वास्तव में इस युग का श्रेष्ठ महाकाव्य है। इसके अतिरिक्त आपके द्वारा रचित छोटी-बड़ी अनेक रचनाओं की सूची है। इन सब रचनाओं में अधिकांश रचनायें देखने का अवसर मिला है। उत्तरोत्तर भाषा-भाव और विषय का प्रवाह साहित्य की महत्ता को दर्शाता है।

'श्रीराम कथा की कथा' में नवीन पद्धति का अनुसरण किया गया है प्रत्येक प्रकरण के अन्त में सम्पूर्ण विषय को लेकर सारांश के रूप में दो चार पंक्तियों में सम्पादन किया। यह अपने आप में कथा सूत्र बन जाता है, जिसकी व्याख्या से सम्पूर्ण प्रकरण का प्रतिपादन हो जाता है।

यद्यपि अनेक विध कार्यव्यस्तता में कथांचित समय निकालकर 'श्रीराम कथा की कथा' पढ़ने का प्रयास किया गया। पढ़ते समय काल का ज्ञान नहीं रहता। प्रकरण दर प्रकरण पढ़ते रहने का मन करता है। कारणमात्र पुस्तक की भाषा-भाव और विषय का प्रवाह है, इस प्रवाह में निरन्तर सरिता की तरह प्रवाहित होता रहा हूँ।

इस कथा में कुछ ऐसे भी प्रसंग हैं जिसके विषय में बहुत कम लोगों को जानकारी होगी। आपने अपने स्वाध्यायीय तथा विलक्षण कल्पनाशक्ति से उन प्रसंगों का समावेश किया है जिससे धार्मिक एवं साहित्य प्रेमी सज्जनों की ज्ञानवृद्धि अवश्य होगी।

मैं आपके इस सत्प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ तथा प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आपकी इस साहित्य धर्मिता को सफलता प्राप्त हो।

अभिनन्दन के साथ
स्वामी राघवानन्द
अध्यक्ष
श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा
दिल्ली प्रदेश